जैन विशेष शब्दों के अर्थ पाण्डुलिपियों के संदर्भ में

(1)	अर्धमागधी	सामान्य जन तक पहुँचने वाली सरल भाषा
(2)	अयागपट्ट	तीर्थंकर मूर्ति के अधोभाग में बनाया गया पत्थर शिलालेख
(3)	अष्ठ मंगल द्रव्य	झारी, कलश, दर्पण, स्वास्तिक, चंवर, पंखा, सिंहासन, छत्र
(4)	षठभुजाकार	छः भुजाओं सहित
(5)	अरिहंत दशा	पाँच परमेष्ठियों में से पहला पद अरिहंत परमेष्ठी
(6)	प्रशस्ति पत्र	पाण्डुलिपि का अंतिम पत्र
(7)	लिपिबद्ध	लिपि को अंकित करना
(8)	कषाय	जो आत्मा को कसे अर्थात् दुःख दे उसे कषाय कहते है।
(9)	जिन	जिनेन्द्र देव, जिसने राग–द्वेष को जीत लिया है।
(10)	अनन्त ज्ञान, दर्शन सुख, वीर्य	चारों प्रकार के सुख जो तीर्थंकर को प्राप्त होते है
(11)	आत्म स्वभाव	आत्मा का स्वभाव, जानना व देखना
(12)	अपरिग्रह	परिग्रह से रहित अर्थात् भोग सामग्री से रहित
(13)	आसक्तिरूप	किसी भी विषय या पदार्थ के प्रति लगाव
(14)	वीतराग देव	राग–द्वेष रहित देव
(15)	पुद्गल	जिसका अनुभव व स्पर्श हम कर सकते है।
(16)	श्लाकापुरुष	ऐसे महापुरुष जिनसे कर्मभूमि प्रारम्भ हुयी
(17)	उत्सर्पिणी	जिस काल में तीर्थंकरों का जन्म होता है।

(18)	अवसर्पिणी	वर्तमान समय जो अभी चल रहा है।
(19)	नवधा भक्तिपूर्वक	मन वचन काय तीनों की शूद्धिपूर्वक भक्ति
(20)	जीर्ण	कटा व फटा हुआ
(21)	पर	विषय वासनाओं व समस्त अचेतन द्रव्य से संबंधित
(22)	निर्वाण	मोक्ष की प्राप्ति
(23)	वाणी खिरना	समवशरण में भगवान के द्वारा वाणी का प्रसारित होना
(24)	उदय पत्र	पाण्डुलिपि के पत्र
(25)	क्षुदा	भूख
(26)	अनादि निधन	जिसका कोई आदि न हो न ही अन्त हो
(27)	अकृत्रिमपना	जो स्वाभाविक न हो
(28)	मिथ्यात्व	विपरीत मान्यता
(29)	सुमेरूपर्वत	जम्बूद्वीप में विद्यमान ऐसा पर्वत जहाँ सौधर्म इन्द्र के द्वारा तीर्थंकर का अभिषेक होता है
(30)	चारणऋद्विधारी	पाँच प्रकार के ज्ञान धारी मुनिराज (मति, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान)
(31)	भव्यत्व	भव्यता (शुभ गति) को प्राप्त होने वाली भव्य जीव
(32)	अभव्यत्वअभव्यता	(अशुभ गति) को प्राप्त होने वाले अभव्य जीव
(33)	अवधिज्ञान	पाँच ज्ञानों में से एक ज्ञान
(34)	भव्य	वाणी को समझने की पात्रता हो

(35)	आष्टाहिन्का	जैन धर्म में मनाया जाने वाला आठ दिन तक उपवास करने का पर्व जिसमें नन्दीश्वर द्वीप के कृत्रिम व अकृत्रिम जिन मन्दिरों की पूजा की जाती है।
(36)	संलेखना	मृत्यु से पहले शरीर के अनुसार क्रम से आहार व जल का त्याग करना।
(37)	गवाक्ष	खिड़की
(38)	सम्यक्त्वतीन	रत्न सम्यगदर्शन, सम्यज्ञान, सम्यगचारित्र, जैन धर्म में इन तीनों को मोक्ष की सीढ़ी कहा है।
(39)	पूर्वविदेहक्षेत्र	भरतक्षेत्र से ऊपर व सिद्धशिला से नीचे का स्थान
(40)	तीर्थंकर प्रकृति	तीर्थंकर के पद पर जो जन्म लेता है उसको तीर्थंकर प्रकृति का उदय होता है।
(41)	अट्टाहस	हंसी
(42)	कायोत्सर्ग	खड़े होकर आत्म स्वभाव में लीन होना।
(43)	अणुव्रतधारी	पाँच महाव्रत – अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत
(44)	क्षोभित	दुःखी
(45)	स्वसन्मुख	आत्मा का स्वभाव जानना, देखना
(46)	वैक्रियक एक	ऐसी रिद्धि जिसके द्वारा कोई भी शरीर धारण किया जा सकता है।
(47)	निरंक	खाली

(48)	प्रवर	उच्च
(49)	वाङमय	वाणी
(50)	योग–निरोध	मन–वचन काय का अभाव
(51)	कुलकर	जैनधर्म में 14 कुलकर बताये है, कुलकर यानि कि जो जीवन–यापन की विधि बताते है। उनमें अन्तिम कुलकर राजा नाभिराय
(52)	नवघन	बादल
(53)	कल्पवासी	स्वर्ग के देवों में एक प्रकार के कल्पवासी देव
(54)	पटह	एक प्रकार बजने वाला वाद्य यन्त्र
(55)	लोकान्तिक	एक प्रकार के स्वर्ग के देव
(56)	पोदन	राज्य
(57)	प्रतिकूल	शुभ लगने वाली सामग्री
(58)	अष्टद्रव्यजल,	चन्दन, अक्षत, पुष्प, द्वीप, धूप, फल, अर्घ्य ये अष्टद्रव्य है। जिनके द्वारा परमेष्ठी की पूजन होती है।
(59)	इक्षुरस	गन्ने का रस
(60)	गुणस्थान	चौदह गुणस्थान होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
(61)	विभंगज्ञान	उल्टा ज्ञान
(62)	कवीट	कवीट एक कठोर फल देने वाला पेड़ है। इसके फल बेल के फल की तरह बड़े और बेहद खट्टे होते है।
(63)	प्रव्रज्या	केवलज्ञान

(64)	घातिया	चार घातिया कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तराय) इन चार कर्मों से अरिहन्त परमेष्ठी रहित होते है।
(65)	सकल	समस्त